Code No
4

35

Imti Inamjamo
HSS

परंपरा और आधुनिकता के बीच की टकराहट

एक व्यक्ती को, अपने सुगम जीवन के लिए परंपरागत और आधुनिक विज्ञान की जरूरत होती है। खासकर आज के ज़माने मे हम देख सकते हैं कई लोग आधुनिकता के पीछे दौडकर अपने परंपराग जीवन शैली को छोड देते हैं, तो कई लोग आधुनिक जीवन से थक-कर, वापस अपने परंपरा यानी पूर्वीकों के रास्ता को अपनाने की कोशिश कर रहे हैं। भूमंडलीकरण और इंटरनेट के इस जमाने में, आधुनिकता ही आगे बढ़कर, लोगों को अपने ओर आकर्षित कर रहे हैं और लोग को आधुनिकता ही महत्व समझकर, अपने ज़िन्दगी में, काम में, परिवार में, अपने से जुड़े सारी चीज़ों में आधुनिकता लाने की कठिन प्रयास में व्यग्र हो रहे हैं। नए पीढ़ी के इस प्रयासों को देखकर, हमारे बुजुर्गों का के बोलती भी बंद हो गए यानी, हमने बंद किए। परंपरा तो, हमारी पूर्व जनता ने अपने अनुभव और विज्ञान के बल से बनाया था, जो हमेशा हमारे धरती, प्रकृति और मनुष्यराशी की ही संरक्षण और प्रगति पर आधारित था।

आधुनिकता दो हम भारतीयों का नहीं ~~बल्की~~ बल्कि पश्चिमी राष्ट्रों से यहाँ आया था। आधुनिकता तो बहुत तेज़ी, सब चीज़ें आसान कर देती है मगर उसे भरोसा नहीं कर सकता और वो हमारी देश के संस्कार और सामाजिक व्यवस्थाओं के खिलाफ है।

आधुनिकता और परंपरा के गुण और दोष

इस दुनिया में जो कुछ है, उन सबको एक ओर से गुण है, तो दूसरे ओर से दोष भी है ऐसे देखे तो आधुनिकता और परंपरा दोनों में गुण और दोष भी है। आधुनिकता नित्यजीवन को आसान बनाती है ~~के~~ पर उसकसे भी ज्यादा मुश्किल बाद में बनाता है। उदाहरण, खाने में हम आधुनिकता के प्रभाव से नए-नए विभव जैसे न्यूडिल्स, फैस्ट फुड आदि का उपयोग करना शुरू किया है जो हमारे स्वास्थ्य को बिगाड़ देती है। वैसे ही, इंटरनेट, सोशल मीडिया आदि के उपयोग भलाई के साथ-साथ हमारी नए पीढ़ी को अपने संस्कार और अनुशासन को भूलकर, आवारे और, बेशरम और बदतमीज बनाए। ऐसी एक-एक क्षेत्रों में, आधुनिकता पहली दृष्टि में अच्छा ही लगने पर भी, हमारे देश के संस्कृति और प्रौढ़ी पर

कलंक लगाते समझ सकते है।
परंपरा की एक ही दोष हम देख सकता है, जो हमें अपनाने में थोड़ा मुश्किल लगेगा मगर अपनाने के बाद ही उसका प्रभाव ज़िंदगी में देख सकेगा।

आधुनिकता : आम जनता पर

आधुनिकता समाज के ऊँचे परिवारों से लेकर, नीचे गरीब लोगों तक फैली है और आज हम देख सकते है कि अनजाने ही हमारी ज़िंदगी आधुनिक हो चुकी है। इसका मुख्य कारण भूमंडलीकरण है। जो आधुनिक चीज़ें विदेश राज्यों में प्रचलित थे वो चीज़ें हमारे राष्ट्र में भी भूमंडलीकरण की वजह से प्रचलित होने लगे और आम जनता तक उसमे आकृष्ट होकर, उन चीज़ों को अपनाने लगे। आधुनिकता की आगमन से ही हमारी आर्थिक और वाणिज्य अवस्था भी बुरी हाल में पड़े यानी हम पुराने के तरह विदेश राष्ट्रों के आर्थिक गुलाम बन गए। आज आम लोग से लेकर, अमीर लोगों तक नित्यजीवनी में उपयोग करनेवाले अधिक चीज़ें विदेशी निर्मित है। यही आधुनिकता में छिपी जाल है जो, पहले हमें आनंद देकर, धीरे-धीरे पूरे राष्ट्र की आर्थिक

व्यवस्था को ठप्प कर लेंगे।

महात्मा गाँधी और आधुनिकता

हमारे ~~ध~~ राष्ट्रपति महात्मा गाँधीजी के सपने की भारत कैसा होना चाहिए, जहाँ सारे लोग खुशी और असमत्व से जिए और एक ऐसा भारत जहाँ हमारी आवश्यक की सारी चीजें यहाँ ही उत्पादन करे, ~~कु हम~~ हर गाँव में, हर एक घर में एक कुटीर व्यवसाय हो। इसके आगे प्रथम कदम उठाते ही उन्होंने विदेशी चीज़ों की बहिष्करण ~~की~~ और स्वदेशीकरण को अपनाया। तो इतिहास देखें तो मालूम होता है कि गाँधीजी ही पहले व्यक्ति थे जो आधुनिकता के दुष्परिणामों पर ~~ध~~ नज़र डाले और उससे अपने जनता को बचाने की प्रथम प्रयास शुरू की। इसी नज़र से देखे तो हम समझ सकेगा की गाँधीजी खुद अपनी ज़िंदगी से हमें एक बेहतर नमूना दिखाया है कि ~~परंपरा~~ परंपरागत जीवनी जीने से क्या-क्या लाभ होगा। उन महान व्यक्ति हमेशा, वो जहाँ जाए, वहाँ सभी अपना देश की ~~परंपरा~~ परंपरा और संस्कार का मूल्य स्वयं निभाकर विदेशियों को भी हमारे ओर तत्पर बनाए। आज भी लोगों को इस बात को यकीन करना मुश्किल लगता है कि ऐसे एक व्यक्ति

इस संसार में जिए थे। उनका जीवनी ही परंपरा की उत्तम उदाहरण है।

बिना आधुनिकता के भी, क्या प्रगति संभव है ?

एक मिथ्याधारणा हमारे समाज में प्रचलित है कि आधुनिकता ही हमारे प्रगति और विकास के आधार है। मगर यह बात बिलकुल गलतफेमी ही है कि, बिना आधुनिकता से भी प्रगति होगी। सभी क्षेत्रों में आधुनिकता के सहारे आए प्रगति, ~~बक्त~~ समय बीतने पर अपना बुरा प्रभाव दिखाने लगते है। पर हमारे इतिहास में देखे तो, जो कुछ चीजें, जो कुछ मकानें, जो कुछ प्रथाएँ हमारे असली परंपरा पर अधिष्ठित बनाए थे वो सब आज भी अटल और सुरक्षित है। जो कुछ सामाजिक नुकसान आज हम सह रहे है, जैसे प्रदूषण, प्रकृतिजन्य आपदाएँ, नए-नए बीमारियाँ,.. आदि, ये सब अगर खुले नेत्रों से देखा जाए तो पता चलेगा कि यह सब तब शुरू हुआ जब मानव अपना परंपरा को भूलकर, आधुनिकता की ~~और~~ ओर दौड पड़ा।

परंपरागत शैली में लौटने की आवश्यकता

भारत के संस्कार और परंपरा के बिल्कुल खिलाफ है आधुनिकता। यही उनके बीच का टकराहट है। दोनों कभी मिल नहीं सकेगा और एक साथ चलेगा। दोनों में असमानताएँ बहुत है। आजकल, हमारी अपने परंपरा की ओर लौटना का वक्त तो कब से आया है। कुछ लोग, मतलब बहुत कम लोग इस सच को मानकर, अपने देश और प्रकृति के फलाई के लिए, अपने संस्कार और परंपरा को फिर से अपनाने की कोशिश तो शुरू किया है मगर ज्यादातर लोग आज भी, आधुनिकता की मायाजाल से छुटकारा नहीं पाया है। और ~~लाभ~~ पाने की कोई चिंता भी नहीं रखते। इन लोगों से तो सिर्फ यही कहना है कि, एक मनुष्य को उसका ज़िंदगी तब सुगम और स्वस्थ बन जाता है, जब वह प्रकृति के नियम का पालन करके अपने ज़िंदगी बिताए, तभी उसका और उस देश का भलाई होगा। आधुनिकता को जल्दी, एक सुबह छोड़ नहीं सकेगा पर धीरे-धीरे हमारी ज़िंदगी को अपना परंपरागत रीती के अनुसार मोड़ ~~स~~ तो ज़रूर कर सकता है।

उपसंहार

" आधुनिकता को छोड़कर, परंपरा को अपनाना " कहने में बहुत आसान लगता है। मगर अपने-अपने ज़िंदगी में इस बात को अपनाना, वो भी इस ज़माने में बहुत बड़ा मुश्किल है और बहुत लोगों को न मुमकिन भी। फिर भी, सच तो यही है कि एक स्वस्थ, शांत और श्रेष्ठ भारत के लिए, सिर्फ भारत के लिए ही नहीं बल्कि पूरे जनता की फलाई के लिए हमारे आगे सिर्फ यही एक रास्ता है। अगर, ऐसा करेगा तो इस बात तो पक्की है कि भारत का श्रेष्ठता और गरिमा और भी बढ़ेंगे। क्यूँकि, भारत की संस्कार ही विश्व के सर्वश्रेष्ठ और उत्तम संस्कार माने जाते है। यदि, वहाँ की जनता भी, अन्य राष्ट्रों से मानी गयी इस बात मान लेते और अपने परंपरा की महत्व समझकर अपनाए, पूरे तो न सही बल्कि, कुछ तो अपना सकेंगे? ऐसे करेंगे तो भारत ही विश्व की सर्व श्रेष्ठ और महान राष्ट्र बनेगा। और सारे विश्व को एक नमूना बनकर, संसार का कल्याण कर सकेगा।